पाठ - 5

الدرس الخامس - هندي

नमाज़ के बाद की दुआएं

الأذكار بعد الصلاة

असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, असतग़ फिरुल्लाह, أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ، أَسْتَغْفِرُ اللهَ

اللهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ، تَبَارَكْتَ «يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम, व मिनकस्सलाम, तबारक्त या जल जलालि वल इकराम,

لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الجَدِّ مِنْكَ الجَدُّ

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहु लाशरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, अल्लाहुम्म ला मानिअ लिमा आतैत, वला मुतिय लिमा मनअत, वला यनफउ ज़ल जद्दि मिनकलजद्द

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ، وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर, ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह, ला इलाह इल्लल्लाहु, वला नाबुदु इल्ला इय्याहू, लहुननेअमतु वलहुल फज़्लु, वलहुस्सनाउल हसन, ला इलाहा इल्लाहु मुख़लिसीना लहुद्दीन वलौ करिहल काफ़िरून (सही मुस्लिम 594)

इसके बाद 33 बार **सुब्हानल्लाह'** سُبْحَانَ الله 33 बार **अल्हम्दुलिल्लाह'** الحَمْدُ لله और 33 बार **अल्लाहु अकबर** 'اللهُ أَكْبَر पढ़े और 100 पूरा करने के लिए यह दुआ पढ़ें

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِير

ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीकलहू, लहुलमुल्कु, व लहुलहम्दु, व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर,

इसी तरह नमाज़ी को हर नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी, सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़ और सूरह नास पढ़ना चाहिए। इन तीनों सूरतों को फ़ज्र और मग़रिब की नमाज़ों के बाद तीन.तीन बार पढ़ना चाहिए।

اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

आयतुल कुर्सी, अल्लाहू लाइलाह इल्ला हुवल हैय्युल कैय्यूम, लाताखुज़ुहु सिनतुं वला नौम, लहु माफिस्समावाति वमाफिल अरज, मनजल लजी यशफउ इन्दहू इल्ला बिइजनिह, यालमु मा बैन ऐदीहिम वमा खलफहुम, वला युहीतून बिशैइम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ, वसिअ कुरसिउ हुस्समावाति वलअरज, वला यउदुहू हिफज़ुहुमा, वहुवल अलिय्युल अजीम